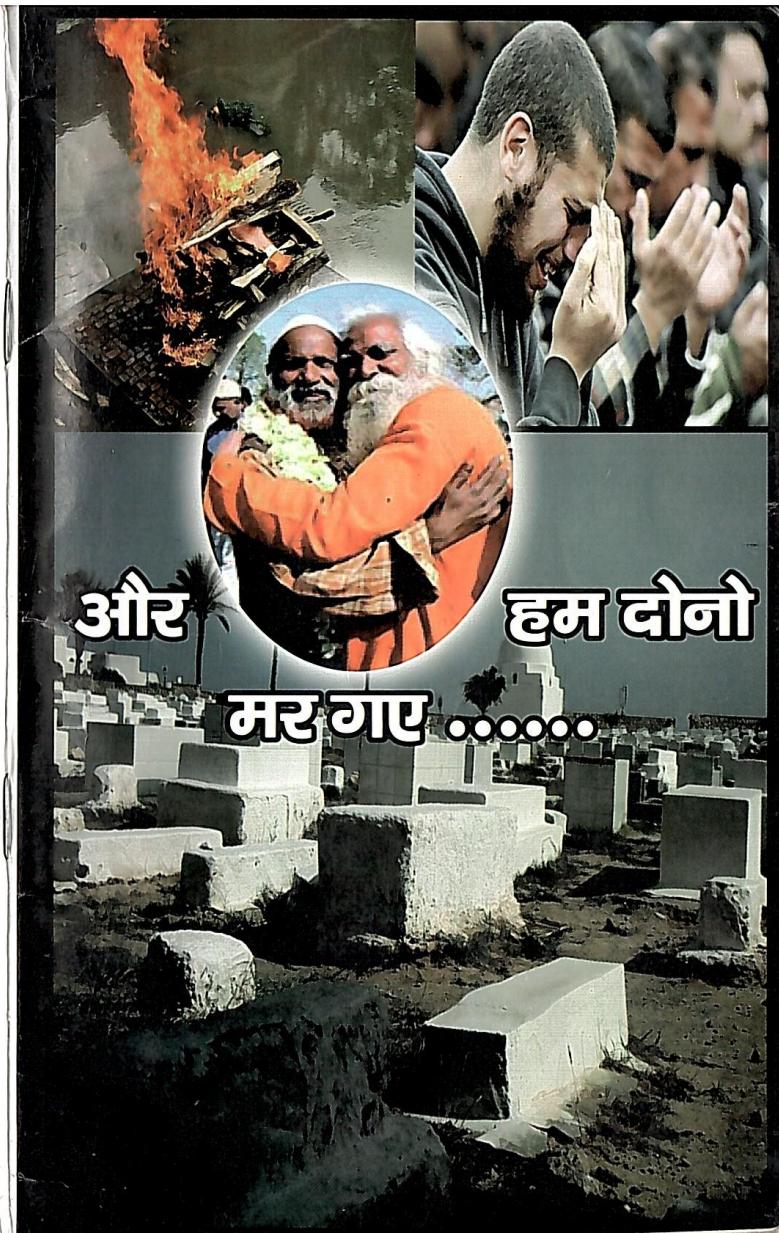


AUR HUM DONO MARGAYE

<http://faizanbhai.blogspot.com>

www.youtube.com/deenkidawat



ओर
हम दोनों

मरणाएँ

आौट हम दोनों मट गए...

1

(इस पुस्तिका में आौट (Bold) शब्द वेद, कुरआन शरीफ, गरुड पुराण और श्रीमद भागवत पुराण के संबंधित अंशों का सार है।)

यह पुस्तिका जीवन है उन लोगों के लिये जो न ईमान लाते हैं औन न ईश्वर औन उनके दूतों के बताए हुए मार्ग पर चलते हैं। मौत के बाद के अनन्त जीवन की उन्हें ज़ना भी चिन्ता नहीं है। परलोक का जीवन उन को बिल्कुल याद नहीं। — अगर इसी घलत में उन्हें मौत ने आ धेन तो न्युद्धा न करे किन्तु का द्वयनिषाम उन व्यक्तियों जैना हो जिनकी आत्म कथा आगमी पक्षों में अंकित है।

रौशनी पब्लिशिंग हाउस, बाजार नसरुल्लाह खाँ, रामपुर उप्र०

मिश्रण की संरचना

“और हम दोनों मर गए...” की संरचना लेखक सतीम रुझ़ की उर्दू पुस्तिका “और मैं मर गया...” से शुरू होती है। मेरे बुजुर्ग दोस्त हबीब अहमद शास्त्री की ख्वाहिश थी कि इसका हिन्दी अनुवाद कराया जाए क्योंकि उर्दू पढ़ने वालों की संख्या सिमटी जा रही है। मैं ने डा. जावेद अन्जुम के पास किताब अनुवाद के लिये भेजी और तर्जुमा नहीं बल्कि उसका एक सुन्दर हिन्दी रूपान्तर तीन ही दिन बाद उन्होंने मुझे भेज दिया।

अब मेरी बारी थी। मैं ने उन की भेजी हुई हस्तलिपि को पढ़ा। किताब बहुत प्रभवशाली थी लेकिन ख़्याल आया कि इस में दो तब्दीलियों की ज़खरत है।

मरने के बाद और कियामत से पहले कब्र की ज़िन्दगी के आनन्द या अज्ञाव की साधारण कल्पना मुसलमानों के जहन में यह है कि यह सब क़विस्तान के ज़मीनी गहे में होता है। किताब के लेखक का भी यही मत था। किर जो लोग दूब कर मरते हैं, जिन्हें कोई नभक्षी जानवर खा जाता है या जो जल कर राख हो जाते हैं, उनका क्या होता है? दरअसल हडीसों में जिस कब्र की ज़िन्दगी का बयान है वह कब्र एक हालत या अवस्था का नाम है, न कि किसी कविस्तान या स्थान का।

दूसरी अहम बात यह थी कि हिन्दी में किताब निकलेगी तो उसे हिन्दू मुसलमान सभी पढ़ेंगे और पढ़ना भी चाहिये। लेकिन ऐसे अधिकांश मुसलमानों की अवधारणा कब्र की ज़िन्दगी के बारे में ग़लत है ऐसे ही मरने के बाद के जीवन के बारे में सनातन धर्म हिन्दुओं की अवधारणा भी न तो वेदों के स्वर्ग और नरक के

एलान से मेल खाती है और न उनके हर मृतक पर पाठ किये जाने वाले पुराणों से। वेद के एक भी मन्त्र में मरने के बाद किसी अन्य योनी में जन्म लेने का उल्लेख नहीं है और गरुड़ पुराण जो हर सनातन धर्मी हिन्दू की मृत्यु पर पढ़ा जाता है उस में भी वही तफसीलात हैं जो कुरआन व हडीस में हैं... और होना भी यही चाहिये। ज़ाहिर है कि मरने के बाद के जीवन के उसूल दुनिया के हर इन्सान के लिये एक होंगे।

इन दोनों विचारों ने मेरे कम्प्यूटर के की-बोर्ड से असल किताब में होल-सेल तब्दीली करवाई। जब तक मेरी उंगलियाँ की-बोर्ड पर रुकीं, मूल पुस्तिका के लेख में उसकी दोगुनी लेखिनी और जुड़ चुकी थीं और बाकी मूल लेख में भी बहुत सी तब्दीलियाँ हो गई थीं। इस तरह नई किताब में सलीम रुझ़ के असल अलफ़ाज़ सिर्फ़ 25% रह गए थे। डा. जावेद अन्जुम ने कहा कि अब इस किताब का नाम “और हम दोनों मर गए...” होगा।

नया प्रिन्ट-आउट जब हबीब साहब के पास पहुँचा तो उन्होंने एक और इजाफे (Addition) की ज़खरत का न सिर्फ़ संकेत दिया बल्कि दो पृष्ठ स्वयं लिख कर भेज दिये। उनका सुझाव भी बज़नदार था। किताब में सिर्फ़ नाफ़रमानों (अवज्ञाकारियों) के बुरे अन्जाम की बात थी, आज्ञाकारियों को खुशखबरी का कोई पहलू न था। उनका भेजा हुआ एक पैराग्राफ़ तो मूल कहानी में खप गया लेकिन बाकी पृष्ठों को मरने वालों की आत्म कथा के बाद पाठकों के नाम एक विन्ती के रूप में अलग से प्रस्तुत करना पड़ा।

अब ये मिश्रण कितना प्रभावी है इसका फ़ैसला इस से होगा कि कितने लोगों के जीवन में इस से कितना परिवर्तन आता है।

सैय्यद अब्दुल्लाह तारिक

और हम दानों मर गए...

मेरा बच्यन तो ना समझी में बीत गया। जबसे होश संभाला, अपने बड़ों की तरह सांसारिक माया मोह में उलझा रहा। मुझे दौलत ही प्यारी थी — इस बात से कोई लेना देना नहीं था, यह धन-दौलत वैध तरीके से आ रही है या अवैध तरीके से। हर तरह का नया फैशन हमारे घर में आता लोक-लाज नाम की चीज़ सिरे से ही मौजूद नहीं थी। रात को मनोरंजन के लिये पूरे परिवार बालों के साथ रोजाना ऐसी फ़िल्म देख कर सोता जो शरीफ लोग अकेले देखते भी शरमाएं। जब भी कोई मेहमान घर आता तो मैं छोटी बेटी को बड़े गर्व से आवाज देता — बेटी! अंकल और आन्ती को डांस करके तो दिखाओ! पत्नी सोच भी नहीं सकती थी कि मेरे साथ ऐसे वस्त्र पहन कर बाहर निकल सके जिस में पूरा शरीर ढका हो। जब तक उसके सीने का कुछ भाग और पूरी क़मर नज़र न आए, मुझे उसे बाहर ले जाते शर्म आती थी।

घर के दरवाजे के ऊपर खूबसूरत और बहुमूल्य पत्थर पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था — ‘हाजा मिन फ़ज़ले रब्बी’ (यह मेरे पालनहार की कृपा है) — अकसर मेरे ज़हन में आता कि शैतान मेरे बारे में क्या सोचता होगा? “दौलत इकट्ठा करने के सब गुर मैं ने सिखाए, फिर उसी कमाई से इतना भव्य घर बनाया — यार अब इतने बेवफ़ा निकले कि उस पर लिखवा दिया — “हाजा मिन.....”!!! कोई मेरे कारोबार के बारे में पूछता तो मैं कह दिया करता — “अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल (कृपा) है”। केवल मैं ही नहीं, मेरे जैसे सभी लोग इसी तरह कहते हैं जो बिल्कुल गलत

बात है। अगर धन दौलत ही खुदा की कृपा होती तो (ईश्वर माफ करे) फिर औन, कारून और हिरनाक्षय पर किस की कृपा थी? क्या अल्लाह उन से राजी था? कदापि नहीं। सत्य यह है जिसका आज पता चला कि — प्रभु की कृपा उसी पर है जिसे वह सदमार्ग की समझ दे।

मेरा घर-बार, कारोबार (जो बताते हुए शर्म आती है) उठना बैठना हर तरह से झूठ पर आधारित था। झूठी कसमें खाकर सौदा बेचना और सुबह बात करके शाम को बात से फिर जाना मेरे लिये बहुत आसान था। प्रशासन में पैंथ होने की वजह से कोई मुझे पूछने वाला नहीं था। शायद ही कोई विभाग ऐसा हो जहां मेरी पहुंच काम न आती हो। मेरी गिन्ती शहर के गिने चुने कुलीन वर्ग में होती थी। इतनी दौलत होने के बावजूद भी पूरी उम्र हज को न जा सका फिर भी बहुत से लोग मुझे ‘हाजी साहब’ कह कर पुकारते। मेरे घर पर एक भीड़ सी लगी रहती। चुगली, पीठ पीछे बुराई, आरोप प्रत्यारोप, जासूसी, फूट डालना, और जोड़-तोड़ हमारी संगत में खूब पसन्द किये जाते थे। ऊंची आवाज में एक दूसरे को गालियां देना तो आम दिनचर्या थी। उस शोर-शराबे से पूरा मोहल्ला तंग था — खासकर अगर पडोस में कोई बीमार होता था, इस्तेहान की तैयारी कर रहा होता, मगर किसी में ज़बान खोलने का साहस नहीं था। मौहल्ले की मस्जिद में मेरा आना जाना बस ईद के दिन ही होता था।

दुनिया की बातें करता मैं थकता नहीं था। मेरी ज़बान कैंची की तरह चलती थी, मगर दुर्भाग्य से मैं अल्लाह और उसके रसूल (सल्लू) का ज़िक्र (याद) करने के मामले में गूँगा था। कभी किसी सदाचारी आदमी से कहीं सामना होता तो पता नहीं क्यों मेरी तबीयत एकदम मचलने सी लगती। मैं खूब मज़े लेकर ऐसे चटपटे

तरीके से सवाल जवाब करता और उस की धर्मपरायणता को निशाना बनाता कि वह वेचारा हार मान ही जाता।

वह नमाज के लिये कहता तो मैं जवाब देता — यह तो फ़ालतू लोगों का काम है, वैसे भी अभी लम्बी उम्र पड़ी है। अभी टांगे साथ दे रही हैं। जब घुटने साथ देना छोड़ देंगे तो फिर माला और मस्जिद ही रह जाएगी। रोज़े की बात पर मैं कहता — रोज़े तो रखें गुरीब, जिनके पास खाने को कुछ नहीं। ज़कात (अनिवार्यदान) के बारे में मेरी राय कुछ इस तरह होती — “यह तो एक तरह का टैक्स है, वह हम सरकार को दे देते हैं।” कोई मेरे घर की तरफ़ इशारा करके परदे का ज़िक्र करता तो मैं इस तरह संबोधन करता — “परदा तो दिल का होता है तुम्हारे अपने मन में खोट है। शर्म तो आँखों में होनी चाहिये।” गुरीब की मदद के बारे में मेरा कहना था कि अल्लाह चाहता तो उन्हें खिला देता। जिन्हें खुदा ने नहीं दिया उन्हें हम क्यों दे?

सत्य धर्म के लिये प्रयास के कामों के बारे में मैं बात सुनना भी पसन्द नहीं करता था। परलोक के विषय में बात होती तो मैं हँसते हुए कह देता — “वह संसार किस ने देखा है? हाँ कोई ऐसा चक्कर हुआ भी तो चूँकि यहां पर हमें बहुत कुछ मिला हुआ है, आगे जाकर भी हमारे पास बहुत कुछ होगा।” ‘मौत’ नाम का शब्द तो शायद ही कभी मेरे ज़हन में आया हो। भई मुझे कोई अकेले मरना है? जहां सब होंगे वहां मैं भी चला जाऊंगा। वैसे भी हम तो मुक्त आत्माएँ हैं। छोड़ो! जिस तरह बन पड़े विंलासिता के साथ दिन बिता लो।

इसके आगे बखान करने का मुझमें साहस नहीं। आगे कुछ सुनाने से पहले दिल करता है मातम, विलाप करूं अपनी हालत पर —

बहरहाल समय बीतता गया, लापरवाही चरम पर थी। एक दिन मुझे लगा मेरा अस्तित्व मेरा साथ छोड़ रहा है अचानक मेरी दशा ऐसी हो गई कि एक गिलास पानी मांगने के लिये मुझे पूरे शरीर की ताकत खर्च करना पड़ी। “दिल का तेज़ दौरा है, बहुत मुश्किल है, दुआ कीजिये”, यह सुनते ही मुझ पर क्या बीती, यह मैं ही जानता हूँ या मेरा खुदा। उस समय मेरी समझ में यह बात आ गई कि मैं कितनी बकवास किया करता था जब मैं कहा करता था कि संगीत आत्मा का भोजन है और गाने बजाने से आत्मा को शान्ति मिलती है। आज तो मुझे यहाँ इस सुकून की सख्त ज़खरत थी — आज मेरा दिल गाना सुनने को क्यों नहीं चाह रहा था?

भाइयो और बहनो। खुदा के लिये मेरी इस आत्मकथा को सुनना छोड़ न देना, कुछ तो मेरा भला करदो — मुझे अभी दिल की भड़ास निकालनी है.....। मुझे अस्पताल के एक कमरे में लौकर लिटा दिया गया। मैं मौत के विस्तर पर पड़ा छत को घूस रहा था। हैरानी की बात यह है कि उस बक्त छत एक बहुत बड़ी स्क्रीन थी और उस पर मेरी धिनौनी ज़िन्दगी की पूरी फ़िल्म चल रही थी। उसमें बड़े से बड़े और छोटे से छोटे सभी पाप साफ नज़र आ रहे थे। कैसी अनोखी फ़िल्म थी वह? मैं गुनाह करता तो दरवाज़े बन्द कर लेता ताकि कोई देख न ले — अफ़सोस यह न सोचा कि एक अस्तित्व मेरी हर एक गतिविधि को देख रहा है। मेरा दुर्भाग्य! धरती वालों से मुझे इतनी शर्म आती है मगर आकाशों के मालिक से मुझे तनिक लाज न आई। आह!! कितना निर्लज था मैं — उस बक्त मुझे एहसास हुआ है कि हे अभागे इन्सान! अल्लाह की जात कितनी संयम रखने वाली है? तेरे निरन्तर पापों और अनाचार को ‘उस’ ने कितना सहन किया और तू ऐसा ज़ालिम कि

उसकी ओर से इतनी मोहलत दिये जाने के बावजूद तू अपनी जान पर निरन्तर अत्याचार करता रहा।

अपनी इसी भयानक फ़िल्म में मैं उलझा हुआ था कि मुझे लगा कि मेरे आस-पास 'लाइला-हा-इललाह' (नहीं है कोई पूज्य मगर अल्लाह के) का जाप हो रहा है। एक औरत की हल्की सी आवाज़ मेरे कानों में पड़ी, "लगता है आँखें किनारे लग गई हैं।" फिर कल्पे के जाप में तेज़ी आ गई। हैरत है! जब मैं गाने सुनता तो अनायास ही मेरी ज़िवान भी हरकत करती थी। साथ-साथ मैं भी गुनगुनाता। आज मेरे चारों ओर एक ही वाक्य दोहराया जा रहा था — मगर बड़ी कोशिश के बावजूद कलमे का एक शब्द भी मेरी ज़िवान से नहीं निकल सका।

अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर को चलती हुई आरा मशीन के सामने कर दिया गया हो। जैसे मेरे शरीर को कैचियों से कतरा जा रहा हो। जैसे मुझे उबलती हुई देग मैं डाल दिया गया हो। जैसे मेरे जिस्म के तलवार से एक हज़ार टुकड़े कर दिये गए हों। मानो जीवित बकरे की खाल उतारी जा रही हो — मानो कोल्हू में गन्ने के साथ मुझे भी डाल दिया गया हो — मानो रेल की पटरी पर मेरा सिर रख कर ऊपर से ट्रेन गुज़ार दी गई हो — मानो जीवित पक्षी को अंगारों पर भूना गया हो — मानो मेरे शरीर के चप्पे चप्पे पर डिल मशीन से सूराख़ किये जा रहें हों — मानो एक भयंकर कांटेदार टहनी को मेरे अन्दर डाल कर एक दम बाहर खींच लिया गया हो। खुदा की कसम! अगर मेरी मौत की उस अवस्था का जानवरों को पता चल जाता तो वह भी सूख कर कांटा हो जाते।

मैं बहुत चिल्लाया, बहुत चीखा। ईश्वर का वास्ता देंकर विन्ती करता रहा कि मुझे छोड़ दो, एक बार मोहलत दे दो, मैं सदाचारी हो जाऊंगा, भविष्य में कभी पाप के करीब फटकूंगा भी नहीं। बहुत कष्ट हो रहा है — हाय मर गया! हाय मेरे अल्लाह! हाय मेरी माँ!! काश! तूने मुझे जना ही नहीं होता! काश! मैं पैदा ही नहीं हुआ होता! काश, मैं मिटटी होता! क्या हो गया है मुझे? आज तो मेरे धन-दौलत भी मेरे काम न आए! कहां मर गए मेरे कर्मचारी? कहां गए सम्बन्ध? कहां गई सिफारिशें? सांसारिक मामला होता तो फोन कालों का तांता बन्ध जाता।

अचानक मौत के फ़रिश्ते (यमदूत) की भयानक आवाज़ मेरे कानों में गूंजी, जिस ने रही सही कसर भी निकाल दी। ऐसा लगा मानो इस आवाज़ से कानों के परदे फट गए हों। "निकल हे दुष्ट आत्मा अपने गन्दे शरीर से — निकल, आज तू बहुत निन्दनीय है। खौलते हुए पानी, (वैतरणी नदी) पीप, कैक्टस और भाँति-भाँति की यातनाओं की तेरे लिये तैयारी है।" हे परमेश्वर! क्या हर दुराचारी की आत्मा ऐसे ही निकलती है? उस समय मैं इतनी तकलीफ़ में था जैसे किसी ने बारीक मलमल का कपड़ा कटीली टहनियों पर ज़ोर से अपनी ओर खींचा हो। इस तरह मेरा पूरा शरीर तार तार हो गया। पहले मेरे पांव ठन्डे हुए, फिर पिंडलियां और धीरे-धीरे पूरा शरीर ठन्डा हो गया। और मैं मर गया.....!

यमदूत ने बहुत बुरे तरीके से मेरी आत्मा खींच कर निकाली जैसे गर्म सल्लाख़ गीले ऊन में रखकर खींची हो। उसी समय आकाश से डरावने चेहरे वाले फरिश्ते (देवता) उतरे — उन्होंने पलक झपकते ही मेरी आत्मा को पकड़ा और एक गन्दे टाट में लपेट दिया जो उनके पास पहले से मौजूद था। जीवन में मेरे पास इतने प्रकार के परफ्यूम थे कि मुझे गिन्ती भी याद नहीं। जिस गली से

गुजरता मेरे आने की खबर हो जाती थी — लेकिन आज मेरे अन्दर से ऐसी बदबू आ रही थी मानो कई जानवरों के मृत शरीर किसी जगह इकट्ठा हों। फ़रिश्ते मेरी आत्मा को लेकर आकाश की तरफ चढ़ना शुरू हो गए। वे देवताओं की जिस टोली के निकट से गुज़रते, वे पूछते यह किस दुष्ट की आत्मा है? वे बताते अमुक के पुत्र अमुक की — वे बड़े अपमान जनक तरीके से मेरा नाम बता रहे थे। काश मेरे कान सुनने के योग्य नहीं होते। जिस ओर से गुजरता असंख्य देवताओं की वाणी मेरे कानों में गूंज रही थी — “धिक्कार हो! धिक्कार हो! धिक्कार हो”!

आकाशीय गन्तव्य पर पहुंचने पर देवताओं ने द्वार खोलने को कहा — मगर दरवाज़ा न खोला गया। आवाज़ आई, “इस तरह के दुष्ट लोगों के लिये आकाश के दरवाजे नहीं खोले जाते और न ही यह लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे — इनका स्वर्ग में प्रवेश इतना असम्भव है जैसे सूर्झ के छेद में से ऊँट का प्रवेश करना। मेरी आत्मा नीचे फेंक दी गई।.....।

ऐसे ज़्लील करके फेंके जाने से मेरी ज़िल्लत तो हुई लेकिन मैं ने फिर भी इत्नीनां का साँस लिया। चलो बच गए, मैं ने सोचा। अब मैं इन भयानक फ़रिश्तों से बच कर ख़मोशी से अपने कब्र वाले मुर्दा शरीर के पास ही पड़ा रहूँगा।

बात यह थी कि मैं अपने शरीर से अलग था फिर भी मैं यह महसूस कर रहा था कि मैं अपने शरीर में हूँ। लेकिन यह शरीर जिस में मैं था, उस से भिन्न था जो मेरी चारपाई पर पड़ा था। इसे शरीर कहना भी अनुचित था क्योंकि यह अभौतिक था और दुनिया वालों को नज़र नहीं आ रहा था। मुझे यह शरीर, पुराने शरीर से निकालते ही दे दिया गया था। लेकिन तभी एक ख़याल ने

दोबारा मेरे नए शरीर के रौंगटे खड़े कर दिये। मैं ने सुना था कि दुराचारियों को कब्र में अज़ाब होता है। वहाँ उन्हें जलाया जाता है और कब्र को इतना तंग कर दिया जाता है कि उनकी हाड़ियाँ पसलियाँ चटख़ने लगती हैं, मानो रोड रोलर से कुचल दिया गया हो। बाहर यातना के फ़रिश्ते, कब्र में आग, धुटन और कब्र का रोलर। कहाँ भागँ? काश मैं जल कर मरा होता। काश मैं दरिया में ढूब कर मरता और मेरी लाश भी न मिलती तो मेरी कब्र ही न होती। काश मुझे किसी हिंसक जानवर ने खा लिया होता। काश...
...। काश मैं हिन्दू होता जिस की कब्र ही नहीं होती — मुझे घर वाले पूरी तरह जला कर मेरी राख नदी में वहा दते.....

मैं इन्हीं विचारों में गुम था कि कोई धम से मेरे पास ही आकर गिरा। मैं ने चौक कर देखा तो मेरे घर के सामने फ्लैट में रहने वाले ठाकुर साहब पड़े कराह रहे थे। “अरे! आप यहाँ कैसे”? वह भी मेरी तरह बरज़खी अभौतिक मध्यकालीन शरीर में थे। मेरी ही तरह दौलत की उनके यहाँ भी रेल पेल थी। लोग पीठ पीछे उन की कमाई को नाजायज़ कहते थे तो क्या हुआ, उनके मुख पर तो उनकी चापलूसी ही करते थे। मुझे याद आया कि एक बार एक नेता के कहने पर हम दोनों ने आपस में झगड़ा कर लिया था। मैं ने मुसलमानों को और ठाकुर साहब ने हिन्दुओं को मदद के लिये पुकारा और देखते ही देखते शहर में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे थे। कुछ मूर्ख, बैवजन लोग मारे गए और बहुत सी दुकानों में आग लगा दी गई। आग तो हमारे और ठाकुर साहब के शोरूमों में भी लगी परन्तु मूर्खों की तरह हम ने दूसरों की दुकानों में नहीं स्वयं अपनी दुकानों में आग लगवाई थी क्योंकि हम दोनों ने एक रात पहले ही अपने शोरूमों से सारा माल निकाल लिया था और बाद में बीमा कंपनी वालों से क्लेम ले लिया था। जब शहर में

कफ्यू लगा हुआ था तो हम दोनों नेता जी के साथ बैठे जाम टकरा रहे थे.....।

मैं इन्हीं ख़यालों में गुम था कि ठाकुर साहब की चीख़ से वापस हकीकत की दुनिया में लौट आया। उठने की कोशिशँ में उनकी चटख़ी हुई पसलियों ने उन्हें चीखने पर मजबूर किया था। “आप यहाँ कैसे”? “क्या आप भी...”? मैं ने उन्हें सहारा देते हुए दोबारा सवाल किया। हाँ हाजी साहब, जहाँ आप, वहाँ मैं। जीवन में साथ रहा तो इस अन्जाम में भी आप के साथ हूँ। शायद मैं आप की अभी तक की दुःख भरी दास्तान जानता हूँ। मैं अपनी छत पर खड़ा आप के घर से आने वाली रोने पीटने की आवाज़ें सून रहा था कि मेरा पैर फिसला और मैं दूसरी मन्ज़िल से नीचे गिर गया। शरीर में तो ज्यादा दूट नहीं हुई लेकिन डर के कारण ज़मीन पर गिरने से पहले ही मेरे दिल की हरकत बन्द हो गई...। “आप मुझ से तो ज्यादा खुश किस्मत निकले” मैं ने उनकी बात काट कर कहा, “मैं दिल का दौरा पड़ने के बाद काफ़ी देर जिया था। जिन्दगी के वह पल बहुत भयानक थे काश मैं भी आपं की तरह पलक झपकते ही मर गया होता। आप मेरे मुकाबले में सौभाग्यशाली निकले”। “क्या खाक सौभाग्यशाली। दुनिया वालों के कहने को तो वे कुछ सेकण्ड थे परन्तु मुझ पर यातना की शताब्दियाँ बन कर बीते। मेरा पैर फिसलते ही यम के डरावने दूत मेरे सामने आगए और मेरे प्राण खींचना शुरू कर दिया। मैं तुम्हें कैसे बताऊँ कि उस समय संसार का एक-एक पल मुझ पर कल्प बन कर बीता। एक बार मेरे घर में झाड़ देने वाली को एक बिच्छू ने काटा था। उसकी चीख़ें थीं कि रुकने का नाम नहीं ले रहीं थीं। वह बुरी तरह जमीन पर तड़प रही थी और लोटें मार रही थी। तब मैं ने उसकी चीख़ों से परेशान होकर यह कहते हुए उसे सरकारी अस्पताल भिजवा दिया था कि एक छोटे से बिच्छू के

काटने पर इतना द्रामा! हाय मैं ने प्राण निकलते समय जाना कि बिच्छू का डसना क्या होता है — औट मैं ने एक नहीं और बिच्छुओं के डसने के बाबाट पीड़ा अनुभव की। उस से अच्छा तो यह होता कि मुझे कोल्हू में पिलवा दिया गया होता, मेरे शरीर को चलती हुई आरामशीन के सामने कर दिया गया होता, मेरे शरीर को कैंचियों से कतरा जाता, मुझे उबलती हुई देग में डाल दिया गया होता, मेरे जिस्म के तलवार से एक हज़ार टुकड़े कर दिये गए होते, रेल की पटरी पर मेरा सिर रख कर ऊपर से ट्रेन गुज़ार दी जाती, मेरे शरीर के चप्पे चप्पे पर ड्रिल मशीन से सूराख़ कर दिये जाते, एक भयंकर कांटेदार टहनी को मेरे अन्दर डाल कर एक दम बाहर खींच लिया जाता, मेरा पूरा शरीर इस तरह तार तार कर दिया जाता जैसे बारीक मलमल का कपड़ा कटीली टहनियों पर ज़ोर से अपनी ओर खींचा गया हो। यदि यह सब यातनाएं एक साथ भी होतीं तब भी इतनी पीड़ा होना मुमकिन न था जो उन शताब्दियों में मुझ पर गुज़री। मैं चीख़ रहा था, तड़प रहा था लेकिन किसी ने न मेरा फड़कना देखा, न मेरी चीख़ों की आवाज़ किसी को सुनाई दी। हाजी साहब, वे यम के दूत मुझे नरकों का हाल सुना कर डरा भी रहे थे और डर की बजह से और भी आजाव यातना सहन करने के काविल नहीं बचे थे। तुम ने सुना? यह कुछ सैकण्ड वास्तव में कितने लम्बे थे? हाजी, मेरी इस अवस्था के जिम्मेदार तुम भी हो”। “मैं! तुम्हारे करतूतों की भला मेरी क्या जिम्मेदारी”? मुझे गुस्सा आगया। अपने गुनाह ही क्या कम थे जो अब यह ठाकुर का बच्चा मेरे ऊपर अपने पाप भी थोपना चाहता था। ठाकुर ने फिर मेरा खून जलाया, “अपनी जिम्मेदारी से आज तुम पन्जे नहीं झाड़ सकते मक्कार पाजी। तुम ने मुझ से क्यों नहीं कहा था कि एक निराकार ब्रह्म के सिवा किसी को न पूज़ूँ”? मेरा गुस्सा अब सातवें आस्मान को छू रहा

था, “ओ ठाकुर की औलाद! बक्वास बन्द कर। तू इस से ज्यादा सजा के लायक था, काफिर कहीं के...” गुस्से से मेरी सांस पूलने लगी और मुँह से झाग निकलने लगे, देख लेना मुझ पर अब तक जो गुजरी सो गुजरी लेकिन तेरा वास सदा के नरक में होगा और मुझे तो आगे बुजुर्ग बचा ले जाएंगे। मैं ने उनके मजार पर कवाली करवाई थी। “बड़ा आया खाजा का चहीता, मैं ईश्वर से साफ़ कह दूंगा कि यह धूर्त हजारों इन्सानों के नरक में जाने का कारण बना है और सबसे कठोर दण्ड का अधिकारी है और.....”। और कुछ आगे सुनने की मुझ में बर्दाशत न थी। मैं ने लपक कर उसके बाल मुट्ठी में जकड़ लिये। उसने भी मेरा टेंटवा दबाना शुरू कया ही था कि चार देवों समान फ़रिश्ते प्रकट हुए। दो ने मुझ खींचा और दो ने ठाकुर को और हमारी लोहे की रोड़ों से पिटाई होने लगी। हमारे चीखने चिल्लाने का उन पर कोई असर न हुआ और जब वे हमारी अच्छी तरह धुनाई कर चुके जो मुझे ऐसा लगा कि वर्षों तक चली, तो वे कहने लगे, “अब तुम दोनों अपने अपने जनाज़े व अर्थी और आखिरी रुसूमात व क्रियाकरम के पास चलो। उसके बाद तुम को तुम्हारी दुर्गति मालूम होगी।” यह कह कर हम दोनों को हमारे घरों की ओर घसीट कर ले जाया जाने लगा।

उधर शहर में जामा परिवार के बड़े-बड़े स्पीकरों से मेरे जनाजे की घोषणा हो रही थी — वह मस्जिद, जिस के बारे में मैं पहले बता चुका हूँ कि पूरे जीवन में बहुत कम ही प्रवेश का सौभाग्य हो सका, मगर न जाने क्यों आज लच्छी-चौड़ी उपाधि के साथ मेरे जनाजे का बार-बार ऐलान हो रहा था। हर बार मुझे ‘हाजी साहब’ कह कर पुकारा गया। जीवित रहते जब कभी किसी के जनाजे का ऐलान होता तो मैं हँसते हुए कहता — “लो जी आज एक और का पत्ता कट गया!” लेकिन इस बात का मुझे आभास भी नहीं था कि इसी स्पीकर से मेरे जनाजे की भी घोषणा होगी।

मेरे पड़ोस में नगर का एकमात्र निराकार उपासना व ध्यान-केन्द्र था जिसे ठाकुर ने इस लिये बनवाया था कि उसके नाम का बड़ा सा पत्थर उसके मुख्य द्वार पर लग जाए वरना जीवन भर वह उस में प्रवेश नहीं कर सका था। उस निराकार ध्यान के केन्द्र से स्वर्गीय ठाकुर महोदय के दुःखद निधन की निरन्तर घोषणा जारी थी।

मेरी लाश की आँखें बन्द कर दी गईं। जबड़ों पर पट्टी बांध दी गई। मेरा दुर्भाग्य! रोते-रोते कुछ ने मातम-विलाप शुरू कर दिया और कुछ ने बाल नोच डाले। इसी बीच अस्त्र की अज्ञान हुई — घर में महिलाओं की भीड़ और बाहर पुरुषों की — लेकिन अफसोस! शायद ही किसी ने नमाज़ पढ़ी हो। मैंने चीख कर कहा — “लापरवाह लोगो! मुझे छोड़ दो, मैं तो अपने अन्जाम को पहुँच चुका — तुम अपनी फ़िक्र करो, नमाज़ का वक्त जा रहा है — मगर इतने शोर-शराबे में मेरी कौन सुनता?”

मेरी लाश के ईर्द गिर्द परिवार जनों और सम्बन्धियों की एक भीड़ थी। एक हाथ छोटी बेटी ने और दूसरा बड़ी बेटी ने अपने गालों को लगा रखा था। पाँव को मेरे बेटों ने अपने बाजुओं में जकड़ रखा था। मेरी बीवी मेरे मृतक चेहरे की ओर बार-बार देख रही थी। मेरी माँ चेहरे पर बार-बार हाथ फेर रही थीं। अन्तिम बार मेरी माँ ने मेरी लाश के हाथों को चूमा — फिर एक दम हलचल सी हो गई — कोई कफन खिराने के लिये कह रहा था तो कोई कब्र खोदने के लिये, कोई लाइट का बन्दोबस्त करने में लग गया तो कोई गुस्सा (मृत शरीर का संपूर्ण स्नान) देने वाले को बुलाने में।

मेरे शरीर को तळे पर लिटा कर गुस्त (सम्पूर्ण स्नान) देना शुरू कर दिया गया। शरीर पानी डाला जा रहा था — तीन बार स्नान कराया गया। मेरे उत्तराधिकारियों के रंग-ढंग भी मुझसे कुछ कम न थे — उन्होंने कफन की जगह रेशमी कढाई वाला नया जोड़ा मेरी लाश को पहना दिया और ऊपर से इस अभागे पर अलकोहल वाले स्प्रे का भरपूर छिड़काव किया। इन सब बुद्धि ब्रष्ट लोगों को क्या पता कि अभी-अभी मेरे साथ क्या बीती है? अगर मैं इन्हें यह बताने के काविल होता कि फ़रिश्तों ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है तो खुदा की क़सम सब मेरी मय्यत को छोड़ कर भाग जाते और अपनी अपनी चिन्ता में लग जाते। इसी बीच मेरी ही प्रशिक्षित संतान में से एक, फोटोग्राफर को ले आया — वह अपने पैसे बनाने के लिये धड़ाधड़ मेरी लाश की तरसीरें बनाने लगा, फिर बीड़ियों वाले आगए — बीड़ियों वालों को देखकर मेरी समझ में यह बात आगई कि मुर्दा शरीर को रेशमी कढाई वाला सूट क्यों पहनाया गया? लोग अपनी-अपनी फ़िल्म बनवाने के लिये मेरी चारपाई के ईर्द-गिर्द घूम रहे थे।

कार्यक्रम के अनुरूप जनाज़े का वक्त हो गया — “देर हो रही है जी!”..... जनाज़ा उठाने की देर थी महिलाओं की अचानक चीखें निकलने लगीं जिस से पूरा मोहल्ला हिल कर रह गया। मेरे बीबी-बच्चे चारपाई से लिपट गए बड़ी मुश्किल से जनाज़े को बाहर निकाला गया। चार आदमियों ने उसे कधों पर उठा लिया। सङ्क पर पहुंचे तो सभी दुकानदार अफसोस करने लगे। कुछ लोग आगे-आगे ट्रेफ़िक कन्ट्रील कर रहे थे। मैंने अंदाज़ा लगाया कि मेरे जनाज़े में हज़ारों की भीड़ है। अफसोस किसी सदाचारी, संयमी और गतों को उठ कर इवादत करने वाले ग़रीब आदमी का जनाज़ा होता तो सौ आदमी इकट्ठा न होते। ठाकुर साहब की

अर्थी भी उसी समय उन के निवास से उठ रही थी। “राम नाम सत् है, सत्य बोलो मुक्ति है”, की आवाज़ों के साथ हज़ारों लोग उनकी अर्थी के साथ शमशान की ओर जारहे थे। यह उस व्यक्ति की अर्थी थी जिस ने कभी जान बूझ कर सच न बोला था।

जनाज़े के स्थान पर अद्भुत दृश्य था — कुछ लोग मेरे जनाज़े के वहां पहुंचने से पहले ही मौजूद थे जो कारोबारी और राजनैतिक गण्ये हांक रहे थे। आवाज आई। — “सब आ गए हैं न?” सफे (पंक्तियां) दुरुस्त की गई। इतने में मेरे बड़े बेटे ने रस्म पूरी करने के लिये हल्के से आवाज निकाली जो शायद पहली पंक्ति वाले भी ठीक से न सुन सके हों। “भाइयो! अगर किसी का उधार मेरे बाप पर हो तो वह जनाज़े के बाद मुझ से संपर्क कर ले।” इमाम साहब ने ‘अल्लाहु अक्बर’ (अल्लाह सब से बड़ा है।) कहा ही था कि एक व्यक्ति की ज़ोर दार आवाज आई — “ठहरो जी कुछ लोग और आ गए हैं।” — बहरहाल इमाम साहब ने ‘अल्लाहु अक्बर’ कह कर हाथ बांध लिये। अफसोस इतने बड़े मजमे में कुछ ही लोग होंगे जिन्हें जनाज़े की नमाज़ आती हो वरना इस मामले में सभी मेरे भाई दिखाई दे रहे थे और मारे शर्म के दाएं-बाएं नज़रे धुमा रहे थे। कुछ सामने लगे बड़े से बोर्ड को घूर रहे थे जैसे कुछ पढ़ने की कोशिश कर रहे हों।

नमाज़ के निवारते ही मेरे इन भाइयों की जान में जान आई। कुदरत का इन्साफ देखो, मैं अधिकांश मरने वालों के साथ ऐसा किया करता था। आज मेरे साथ भी ऐसा ही व्यवहार हुआ। मेरे जनाज़े में ऐसी कई हस्तियां मौजूद थीं जो इस योग्य थीं कि मेरे साथ उनका भी जनाज़ा पढ़ दिया जांता।

अन्तिम दर्शन के लिये मेरे मुर्दा शरीर के मुँह से चादर हटा दी गई — बेढ़ंगी सी कृतार में सभी लोग मेरा मुँह देख कर आगे बढ़ने लगे — कोई अपने कानों को हाथ लगाता, कोई मुँह ऊपर करके हाथ जोड़ता। किसी की आवाज़ आई — “ऐ अल्लाह माफ़ कर दे!” हर कोई मेरे बेटों को ढूँडता ताकि जनाज़े में अपने सम्मिलित होने की सूचना दे। फिर मेरी लाश को कम्भों पर उठा कर सब ने मेरी कब्र की तरफ़ (जो पहले से तैयार थी) चलना आरम्भ कर दिया — एक दम फूलों की ढुकान पर भीड़ लग गई। कुछ ने गुलाब के फूलों के हार लिये और कुछ पत्तियाँ लिफाके में डाल कर ले आए। शब को कब्र में उतार कर उस पर मिट्टी डाली जाने लगी। मेरे कुछ हितैषी बराबर वाली कब्र की मिट्टी खुरच खुरच कर कबर पर डाल रहे थे। इस तरह मेरे शरीर को मनो मिट्टी के नीचे दबा दिया गया.....। सब अपने-अपने घरों को चले गए। मैं जूतों की आवाजें सुनता रहा। मैं सोच रहा था कि जितनी सज़ा मिलनी थी, मिल चुकी, अब यातना के फ़रिश्तों से बच कर अपने पुराने शरीर के पास जा कर आराम से लेटूँगा। मुझे क्या पता यातना की वह तो सिर्फ़ शुरूआत थी — ऐसी दर्दनाक यातना कि किसी दुश्मन को भी इस की हवा न लगे। मेरी कब्र के बाहर गुलाब की जबरदस्त सुगन्ध, अगरवत्तियों की लपटें और गीली मिट्टी की अपनी एक खुशबू थी — लेकिन अपने पुराने शरीर के पास पहुँच कर कब्र के अन्दर मेरा मन घबराने लगा — इतना घोर अंधेरा और मैं एकान्त में.....।

मैं वहाँ से भागने की बात सोच ही रहा था कि कब्र ने अजीब तरीके से मुझे ललकारा — “भागता कहाँ है, हे लापरवाह मानव! तू सांसारिक मायामोह मे मग्न था — मगर कोई दिन ऐसा न

बीता जब मैंने तुझे आवाज़ न दी हो कि मैं घबराहट का घर हूँ, मैं आतंक का घर हूँ, मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं खौफ़ का घर हूँ। आज जब कि तू मेरे लिये बेवस कर दिया गया है, तू देखेगा कि मैं तेरे साथ कैसा बुरा व्यवहार करती हूँ। तू आज मुझ से पीछा नहीं छुड़ा सकता। तू जहाँ भी जाएगा, मैं तेरा पीछा करूँगी। क्या तू समझता है कि कब्र बस यही ज़मीनी गड़दा है? हे अज्ञानी! मैं कोई स्थान नहीं बल्कि अवस्था हूँ। असली कब्र तो मरने के बाद से हिसाब के दिन तक की अवस्था का नाम है। तेरा पुराना भौतिक शरीर तो यहाँ गल कर ख़त्म हो जाएगा लेकिन तुझे इस समय जो बरज़खी (अभौतिक मध्यकालीन) शरीर मिला हुआ है उसी के माध्यम से तुझे दुःखदायी पीड़ा दी जाएगी। तू क्या समझ रहा था? यदि तू ज़मीन में दफ़न न होता तो तुझे कब्र का अज़ाब नहीं होता? जिस किसी ने भी संसार के सीमित परीक्षा के जीवन में अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की, वह मेरे अज़ाब से न बच सकेगा।” घबराहट और मायूसी के आलम में भी मैं उस दुष्ट ठाकुर का व्यवहार नहीं भूला था। मैं ने सवाल किया, “तो वह ठाकुर भी नहीं बचेगा ना? लेकिन कैसे? उसकी कब्र तो बनी ही नहीं.....! उसे सज़ा कैसे मिलेगी?” “हा हा हा....। वह चाहे जल कर राख हो जाए, चाहे उसकी अस्थियाँ गंगा में बहा दी जाएं और चाहे उसकी राख कहीं दबा या उड़ा या बहा दी जाए, उसकी कब्र उसके साथ रहेगी। मूर्ख, मैं ने कहा था ना कि कब्र कोई स्थान नहीं बल्कि एक अवस्था या हालत का नाम है। कब्र की अवस्था में मरने के बाद से महा प्रलय तक हर दुष्ट को उसके लिये निश्चित समय पर कठोर यातना होती रहेगी। कभी उनकी कब्र अवस्था में उनके लिये नरक की झुलसाने वाली हवा भेजी जाएगी, कभी वातावरण से उन पर इतना दबाव डाला जाएगा कि उनको अपनी परिस्तियाँ चटख़ती महसूस होंगी कभी उन पर ऐसे साँप-विच्छू छोड़े

जाएंगे जो दुनिया वालों को नज़र नहीं आते। प्रलय के दिन तक वह सिसक-सिसक कर जियेंगे और हिसाब के बाद उनका सदा नरक में वास होगा....”।

तभी अचानक दो डरावने फरिश्ते वहाँ आ धमके। उन्होंने मुझे जकड़ लिया — मत पूछो मेरी उस समय क्या हालत थी। बेहद क्रुध शैली में वे बोले — “तेरा प्रभु कौन है? हैरत की बात यह है कि फरिश्ते चाहे जो ज़बान बोलते हों लेकिन उनकी बात मैं समझ पा रहा था। — वे पूछ रहे थे कि तेरा प्रभु कौन है? अर्थात् तू अब तक किसे अपनी विगड़ी बनाने वाला मानता रहा था? जैसे शैतान ने किसी को छूकर बावला कर दिया हो, मैं ने कहा, “हाय-हाय मैं नहीं जानता!”। फिर ज्यादा कड़ाई से बोले — “तेरा दीन (धर्म) क्या है, तू अब तक किस धर्म का पालन करता रहा?” — दोबारा मैंने वही बेतुका जवाब दिया। आकाश से आवाज़ आई — “यह अधर्मी है”। इसका ओढ़ना बिछौना आग का बना दो — इसे आग के वस्त्र पहना दो — इस पर नरक की ओर से एक द्वार खोल दो!”

इस आवाज़ के आने की देर थी — उसी समय कब्र में लू और गरमी आना शुरू हो गई — फिर ऐसा लगा कि मेरी कब्र इतनी तंग हो गई कि मेरी पस्तियां एक दूसरे में धूस गईं। और क्या सुनाऊँ.... एक भयानक फरिश्ता मुझ पर तैनात कर दिया गया जिस के हाथ में लोहे की एक छड़ थी, उसने उससे मुझे मारना आरम्भ कर दिया। भाइयो और बहनो! मुझे उस वक्त कितना कष्ट हुआ, अगर तुम्हें पता चल जाए तो खुदा की क़सम तुम अपने मुदों को मौत के फौरन बाद छोड़ कर भाग जाओ।

दर्द से तड़पते हुए एक अजीब मन्ज़र मेरी नज़रों ने देखा। जो कुछ मेरी आँखों ने देखा उसकी अद्भुतता में मैं अपने रिस्ते हुए ज़ख्मों का दर्द भी भूल गया। सामने ही एक विशाल भवन था जिस में एक व्यक्ति राजाओं जैसे कपड़े पहने गाव से टेक लगाए बैठा था। उसके खूबसूरत बाल उड़ने से और उसके चेहरे के आनन्दगम भावों से ज़ाहिर था कि ठंडी और सुखदायी हवा के झोंकों से वह आनन्दित हो रहा था। फरिश्ते मुझे अध-मरा छोड़ कर जाऊँके थे। मैं ने फुरती से उठ कर उस खुशकिरण की तरफ दौड़ना चाहा लेकिन किसी नज़र न आने वाली दीवार से टकरा कर अपने झुलसते हुए क्षेत्र में ही वापिस औंधे मुँह गिर पड़ा। मैं ने गिड़गिड़ा कर उसे पुकारा, “सरकार, महाराज! मुझे अपने कदमों में आने का रासता बताइये। मैं असहनीय पीड़ा में हूँ”। वह मुस्कुराया, “मैं कोई महाराज नहीं हूँ। अति साधारण सा व्यक्ति था लेकिन अब मेरे ठाठ यकीनन राजा महाराजाओं से बढ़ कर हैं। मैं मरने के बाद इस हालत में हूँ कि स्वर्ग की हवाएं मुझ पर से गुज़र रही हैं और मुझे हर तरह का ऐश हासिल हैं”। “श्रीमान, जनाब, माई बाप, हज़रत! मुझे अपना सेवक बना लाजिये। मैं आप के हाथ जोड़ता हूँ मुझे अपने पास बुला लीजिये, सदा आप की गुलामी करलंगा महाराज, प्लीज़...”, मैं फक्फक-फक्फक कर रो पड़ा। “मैं चाहूँ भी तो तुम मेरे पास नहीं फटक सकते मूर्ख। तुम ने सांसारिक जीवन में पैरग़न्धर हज़रत मुहम्मद स. के कथन या हदीसें नहीं पढ़ी थीं? ईमान और आचरण से विमुख व्यक्ति को कोई महाप्रलय तक इस अन्जाम से नहीं बचा सकता जो तुम्हारा हुआ है और कियामत या महा प्रलय के बाद तो दुष्टों का अन्त इतना भयानक होगा कि तुम अभी उस की कल्पना भी नहीं कर सकते”। आशा की किरण के ग़ायब होने के साथ ही मेरे रोम-रोम की दुखन का एहसास फिर जाग उठा और साथ ही वह व्यक्ति भी नज़रों से ओझल होगया,

मानो शरीर के साथ मानसिक यातना भी देने के लिये ही उस की अवस्था मुझे दिखलाई गई थी।

जब मुझ में कुछ जान आई तो मैं कब्र से निकल कर भागा। मैं ने तय कर लिया था कि अब कभी इस मन्दूस कब्र के प्रास भी न फटक़ूँगा। फिर प्रलय के दिन तक कहाँ भटकता फिरूँ? कुछ समझ में न आया तो अपने घर की ओर ही चल पड़ा। वहाँ मेरे घर वालों ने मेरी माफिरत (गुनाहों से माफी) के लिये एक मदरसे के बच्चों को पैसे देकर कुरआन पाक ख़त्म करने के लिये बुलाया हुआ था। बहुत से बच्चे मेरे कमरे में ज़मीन पर चादर बिछाए अलग अलग सिपारे पढ़ रहे थे। मेरे घर का कोई सदस्य वहाँ नहीं बैठा था। मैं ने सोचा चलो यहीं सही... ज़िन्दगी में कभी कुरआन पड़ा, न सुना तो किन आज कहीं जाने को नहीं है तो यहाँ बैठ कर कुरआन ही सुनता हूँ। शायद इसी से कुछ सुकून मिले। उस वक्त मुझे सुकून की बहुत ज़रूरत थी। हिसाब के दिन और अखिरत (परलोक) की मुझे फिर न थी। वहाँ तो मुझे ख़्वाजा साहब का बहुत आसरा था। मैं एक ख़ाली जगह बैठ गया। अरबी नहीं आती है तो क्या? ख़ाली कुरआन सुनने का बहुत अज्ञ है। मैं ने मिली जुली बहुत सी आवाज़ों में से एक बच्चे की आवाज़ पर कान लगा दिये। मेरी हैरत की इन्तहा न रही जब मैं ने देखा कि मैं अरबी समझ रहा था। बच्चा अरबी में सिपारा पढ़ रहा था और मतलब मेरी साफ़ समझ में आ रहा था। सिफ़ तर्जुमा (अनुवाद) ही नहीं, तफ़सीर (व्याख्या) भी मेरी समझ में आ रही थी। "...क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन्हें सिफ़ यह कहने पर छोड़ दिया जाएगा कि वह ईमान लाए और उन्हें आज़माया न जाएगा? यक़ीनन उन से पहले लोगों को भी हम ने आज़माया ताकि अल्लाह उन्हें जान ले जो सच्चे थे और झूँगों को भी जान ले।

क्या जो लोग बुटे कर्म करते हैं उन्होंने यह समझ लिया है कि हमारे कानून को बाईपास करके आगे बढ़ जाएंगे? बुटे फ़ैसले हैं जो वह अपने लिये कर रहे हैं..." यह मैं क्या सून रहा था? मुझे एक झटका लगा। क्या ख़ाली कलिमा पढ़ने और अपने आप को ईमान वाला कहने पर नज़ात न होगी? ईमान कर्मों की बुनियाद पर तै होगा? मैं ने कर्मों का तरफ़ तो कभी ध्यान दिया ही न था। मैं ने घबरा कर दूसरे बच्चे के पाठ पर कान लगाए। "...बेशक चाहे ईमान वाले कहलाते हों, चाहे यहूदी हों, चाहे ईसाई या अब्द ख़र्मों वाले, इन में से जो कोई भी अल्लाह पर और अन्तिम ईश्दूत पर ईमान लाया और ईमान के साथ उसने अच्छे कर्म भी किये उसके लिये उसके सब के पास अच्छा बदला होगा और न उन्हें कोई ख़ौफ़ होगा न गम..." फिर वही अच्छे कर्मों की शर्त। मैं घबरा गया। और इसका क्या मतलब है कि ईमान वालों में से जो कोई अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाए? क्या सब मुसलमान अल्लाह पर ईमान वाले नहीं गिने जाएंगे। तीसरे बच्चे की आवाज़ कानों में गूँजी। "... और यह तो यहूदी कहते हैं कि हमें जहन्नम (नरक) की आग छुएगी भी नहीं, हाँ अगर आग में गए भी तो बस गिन्ती के कुछ दिनों के लिये इन से पूछो कि क्या अल्लाह से तुम ने ऐसा कोई वादा ले लिया है कि वह अब अपने वादे के खिलाफ़ नहीं कठेगा? नहीं, बत्कि जिस किसी ने भी बुटाई कमाई और उसको उसके जुम्मी ने थेट लिया, वही आग वाले लोग होंगे। वहाँ उनका वास होगा..."। यहूदी कहते हैं? यहीं तो मुसलमान कहते हैं! शायद अल्लाह ने यहूदियों से कोई ऐसा वादा न किया हो लेकिन मुसलमानों से किया हो। मेरा दिल अब इतनी ज़ोर से

धड़क रहा था कि अगर दुनिया वाले मरने वालों की आवाजें सुन सकते तो धक-धक की आवाज़ पूरे घर को सुनाई देती। इस उम्मीद में कि शायद कोई उम्मीद की किरन किसी आप्त से मिल जाए, मैं ने जल्दी जल्दी बहुत से बच्चों का कुरआन सुन डाला। “...और डरो उस दिन से जब कोई किसी के किसी काम न आएगा और न किसी की तरफ से कोई बनराशि बदले में कुबूल की जाएगी... (फ़तिहा वगैरा के सवाब की उम्मीद भी गई) ... और न कोई सिफारिश ही उसे फ़ायदा पहुँचा सकेगी और न उनको कोई सहायता ही पहुँच सकेगी....”। सिफारिश हुई भी तो फ़ायदा न पहुँचएगी? “... ईमान वालों... बचो उस आग से जो न मानने वालों के लिये तैयार की गई है...” “.. इत्म (ज्ञान) के केन्द्र से दूर रहने वाले कहते हैं कि हम ईमान ले आए उनसे कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए बत्कि अपने आप को मुसलमान कहते रहो। ईमान तो अभी तुम्हारे दिनों में दाखिल भी नहीं हुआ है...” “ज़माना गवाह है कि उन इब्सानों के सिवाय सभी धारे में हैं जिन्होंने ईमान लाने के बाद अच्छे कर्म किये और दूसरों को भी सत्य की ताकीद (आग्रह) करते रहे और उस पट डटे रहने की ताकीद करते रहे” “...क्या तुम ने यह समझ रखा है कि ज़ज्जत (स्वर्ग) में दाखिल हो जाओगे जबकि अल्लाह ने तुम में से दीन (धर्म) के लिये अव्यक्त भेन्हन उठने वालों को और डटे रहने वालों को अभी उनके कम्मी द्वारा जाना ही नहीं है...”। स्वर्ग में जाने का कितना आसान नुस्खा बता कर मीठी नींद सुलाया जा रहा है, दुनिया के मुसलमानों को, मैं ने मायूसी के आलम में सोचा —

और अब यहाँ कुरआन के तीस पारों के बीच बैठ कर पहली बार यह ख़्याल आया कि अल्लाह ने कुरआन को इन्सानों की हिदायत और नजात के लिये नाज़िल फ़रमाया था। अगर जन्मत और मुकित इतनी आसान होती जितनी मुसलमानों को समझाई जाती है तो इस से सम्बंधित बातें तो कुरआन पाक के एक सिपारे के दसवें हिस्से में आजातीं। क्या अल्लाह ने 29 पारे फुजूल ही नाज़िल फ़रमाए? वाकई कैसे धोखे में बीती ज़िन्दगी। “...क्या तुम अल्लाह की किताब के कुछ हिस्सों को मान कर बाकी की नाशुक्ती करोगे? जो कोई तुम में से ऐसा करेगा उसका बदला इसके सिवाय और क्या हो कि दुनिया की ज़िंदगी में भी रुक्खाई हो... .. (दुनिया वालों में अपना मूल्य तो मैं देख ही चुका था) और क्यामत (महा प्रलय) के दिन उन को सब से करोट अज़ाब की तरफ लौटाया जाएगा...” मैं अपने घुटनों में मुह दबाए सुनता रहा और इस आयत के साथ जिस पर मैं ध्यान लगाता, मेरे घुरे अन्जाम की ख़बर यकीनी होती गई। दूटी उम्मीदों और थके हुए कदमों के साथ मैं घर से बाहर निकल आया।

मैं ने सोचा टाकुर का पता लगाता हूँ, वह निश्चय ही मुझ से बेहतर हाल में होगा। उस से थोड़ी कहा सुनी हो गई थी तो क्या हुआ, माफ़ी माँग लूंगा। आखिर जीवन के इतने वर्ष हर तरह के धन्धों में साथ बिताए थे। धर्मों के टेकेदार तो दुनिया में परस्पर झगड़ते रहते हैं लेकिन काले धन्धों वाले उसूलों के पक्के होते हैं। वे मुसीबत में एक दूसरे के काम आते हैं। यह सोच ही रहा था कि मेरा पड़ोसी टाकुर चीखता चिल्लाता मेरे पास आकर गिरा। अब इसे क्या हुआ? बड़ी दयनीय स्थिति थी उसकी। वह आँखें बन्द किये चीखे जा रहा था, “वचाओ, वचाओ, इन ज़ालिमों से मुझे बचाओ”। “ठाकुर! ठाकुर! होश में आओ”। यहाँ और कोई

नहीं, सिर्फ मैं हूँ। तुम किस से डर कर चीख रहे हो? होश में आओ, आँखें खेलो। यह मैं हूँ, तुम्हारा यार। मैं ने उसे सहारा देकर उठाना चाहा तो उस ने डरते डरते आँखें खोलीं और फिर एक चीख मार कर मुझ से लिपट गया। हाजी प्यारे भाई, मुझे माफ कर दो, मैं ने तुम्हारे साथ बहुतं बदतमीजी की थी मगर भगवान के लिये मुझे माफ कर दो, मुझे माफ करदो”। “आखिर हुआ क्या तम्हारे साथ। किस से बचाने की बात कर रहे हो ठाकुर?” मैं उसकी हालत देख कर अपनी तकलीफ भूल गया। “हाजी साहब मुझे अपने साथ अपनी कब्र में ले चलो। वहाँ मैं उन जल्लादों से सुरक्षित रहूंगा” ठाकुर अब चीखना बन्द करके सिस्कियों से रो रहा था। “मेरी कब्र में चलोगे और वहाँ सुरक्षित रहेगे? मेरी हालत देख रहे हो? मैं तो खुद तुम्हें तलाश कर रहा था कि कब्र से भाग कर तुम्हारी पनाह माँगूँ। अब मैं समझ गया हम जैसे लोगों को कहीं पनाह नहीं मिलेगा। हम दोनों वहीं बीराने में पढ़रों पर बैठ गए। रात के सन्नाटे और अंधेरे ने माहौल को और डरावना बना दिया था। अगर उस वक्त वहाँ बस्ती का कोई इन्सान निकल आता तो उसके रौंगटे खड़े हो जाते लेकिन हमें उस माहौल में ज़रा भी डर नहीं लग रहा था क्योंकि हम दोनों पर जो कुछ बीता था वह इस से कहीं ज्यादा डरावना था। वहाँ बैठ कर हम ने एक दूसरे को अपनी दास्तान सुनाई।

मैं ने ठाकुर को जो सुनाया वह आप पहले ही सुन चुके हैं। इस बीच उस पर क्या बीती वह होश उड़ाने के लिये काफ़ी है। उसने मुझे जो बताया उसी के शब्दों में सुनिये।

“यम के दूत मुझे तुम्हारे पास से खींच कर मेरे घर ले गए। वहाँ बहुत भीड़ थी। घर में घुसते समय मैं ने देखा कि मेरे करीबी और दूर के जानने वाले सभी एकत्रित थे लेकिन मेरी मौत पर कोई दुखी नज़र न आ रहा था। कुछ लोग अपनी कारोबारी बातों में

मसरूफ़ थे। आगे बढ़ा तो नेता जी पैर फैलाए लौन चेयर पर बैठे अपने चन्दों के सामने मेरी मृत्यु पर अपना शोक प्रकट कर रहे थे, “कमबख्त इतना अचानक मर गया। अभी उसके लड़कों में इतनी समझ है नहीं कि आने वाले इलेक्शन में पाँच करोड़ मुझे दे सकें...। मुझ में उस कमीने की ओर बातें सुनने की बदौशत न थी। यद्यपि मेरे गले में पशुओं की तरह रस्सी पड़ी थी जिस का सिरा एक यमदूत के हाथ में था, फिर भी मैं ने पूरी ताकत से नेता से दूर भागना चाहा जिस से मेरा गला घुटने लगा। एक नमक हराम अपने बराबर खड़े व्यक्ति से कह रहा था, ‘ठाकुर साहब के लिये अच्छा ही हुआ, बिना अस्पताल की तकलीफों के पलक झपकते खत्म हो गए’। वह कमीना परसों ही गिड़गिड़ा कर बिलटी छुड़ाने के लिये मुझ से पाँच लाख उधार लेगया था जो उसे आज वापस करने थे। मैं जानता था कि अब वह आराम से वह रकम डकार जाएगा। मेरी हर वक्त चापलूसी करने वाले सबसे वफादार मुलाज़िम की आवाज़ भी मेरे कानों में पड़ी जो एक और मुलाज़िम से कह रहा था, ‘शव का थोबड़ा देखा? केसी फटकार वरस रही है?’ सोग में आए किसी और शुभ चिन्तक के शोक-शब्दों को सुन कर सहन कर सकने की हिम्मत मुझ में न थी। मैं अपना गला घुटवाता, यमदूतों को घसीटता हुआ अपने घर में घुस गया।

अन्दर मेरा शव नीचे जमीन पर रखा था। जब तक मैं जिया आराम दायक गद्दों पर लेटा। मैं यद्यपि अपने पुराने शव में नहीं था लेकिन उसका यह अपमान देख कर मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं ने चीख़-चीख़ कर अपने लड़कों को इस पर डाँटा लेकिन उन्हें मेरी आवाज़ सुनाई न दी। शव को नए कपड़े पहना दिये गए थे लेकिन नाक में रुई टुंसी हुई थी जिस में से कुछ गन्दगी रिस कर गल पर वह रही थी। मेरा मुँ डरावना भी लग रहा था और बहुत धिनावना भी। मेरे लड़के अपने सिर मुंडवा कर सफेद कपड़े पहने मेरे शव के पास बैठे थे। पत्नी और अन्य सम्बंधी महिलाएं भी

सफेद कपड़े पहने वैठी थीं। पण्डित जी मेरी आत्मा की शान्ति के लिये पाठ कर रहे थे परन्तु वहाँ बैठे लोगों को मालूम न था कि मेरे आत्मा को न केवल ज़रा भी शान्ति न मिली थी बल्कि मैं तो लगातार खौफ़ और दर्द के घेरे मैं था। यह पण्डित मेरे घर वालों से बहुत सा माल लेकर यह कह कर चला जाएगा कि अब ठाकुर साहब की आत्मा को शान्ति प्राप्त होगई। मुझे उसके इस पाखण्ड पर गुरसा तो बहुत आया लेकिन कर क्या सकता था। मैं इस नियत से कि शायद किसी तरह अपने लड़कों को उसके पाखण्ड से अवगत करा सकूँ, अपने बड़े लड़के के करीब खिस्का। मैं ने सुना कि वह खुसफुसा कर दूसरे लड़के के कान में कह रहा था, 'जल्दी से यह ढोंग खत्म हो और पापा का क्रियाकर्म हो जाए तो इन्ध्योरेन्स क्लोम की तैयारियाँ शुरू की जा सकें लेकिन यह पण्डित तो बहुत समय लगा रहा है'। हाय अफ़सोस वहाँ सिर्फ़ पण्डित ही नहीं मेरे घर वालों समेत हर एक ढोंग रचा रहा था।

मेरा दिमाग़ झनझना रहा था। ऐसी ज़हनी तकलीफ़ मैं ने जीवन में कभी नहीं झेली थी। तभी यमदूतों में से एक ने अपना भाला मेरी कोख में बहुत ज़ोर से चुभो कर कहा, 'तुम्हें यहाँ इसी लिये लाए थे कि तुम मानसिक यातना का यह भाग भी भोग लो। यहाँ पण्डित तुम्हारी आत्मा की शान्ति के लिये गरुड़ पुराण का पाठ कर रहा है। अब चलो यहाँ से जो कुछ यह पाठ मैं कह रहा है तुम सुन कर क्या करोगे तुम पर तो वह सब खुद बीतने जा रहा है, चलो चल कर उसका साक्षात्कार करो'।

दोनों यमदूत मुझे एक कॉटोंदार मार्ग पर ले चले। वे स्वयं तो पृथ्वी से ऊपर-ऊपर तैरते हुए चल रहे थे लेकिन मेरे पैर कांटों से छलनी हो रहे थे। जैसे ही पीड़ा की वजह से मेरी चाल हल्की होती, मेरे ऊपर कोड़ों की माट पड़ती। तभी अचांक बहुत बड़े-बड़े जबड़ों और दांतों वाले कुते वहाँ प्रकट हुए। डट की वजह से निकलने वाली मेरी चीख दर्द की चीखों में बदल गई

क्योंकि उन्होंने मुझे काटना और उधेड़ना शुम कट दिया था। शायद ही किसी जीवित इब्सान को बहुत से खूँखाए कुतों द्वारा एक साथ उधेड़े जाने का तजुर्बा हुआ हो। यमदूत मुझे घसीटे हुए एक बालू के टेगिस्तान में ले चले। ऊपर सूरज ऐसे तप रहा था जैसे पचासों सूर्यों की गरमी लेकर आया हो। और नीचे मेरे ज़ख्मी पैदों में जलती हुई बालू धूसी जारी ही भेटा गला इतना सूख गया था कि उसमें काँटे चुम्ब रहे थे। मैं ने पानी मांगा, तो वह एक डरावनी हँसी के साथ बाले। ईश्वर के बागी को पानी? यहाँ की गरमी और घ्यास तो बस एक ट्रेलर है नरक की आग और घ्यास का। अब पुकारो अपने उन देवी देवताओं को जिनको तुम पूजते थे। तुम्हें ईश्वर की अन्तिम वाणी किसी मुसलमान ने नहीं पहुँचाई तो क्या? क्या वेद में यह शिक्षा नहीं है कि जो लोग अधीरी, पानी आदि से बनी चीजों की उपासना करते हैं वह घोट अंक्षाट में गिरते हैं? तुम ने ईमानदारी से वेद का अध्ययन किया होता तो वह तुम्हें कुरआन और ईश्वर के अन्तिम ईश्वर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम की पुष्टि करते हुए मिलते और तुम ईमान बाले होते। यह कह कट यमदूतों ने मुझ पट कोड़े बदसाने शुम कट दियो। क्या बताऊँ हाजी, नरक में भी शायद इतनी पीड़ा न होगी जितनी उस समय मैं ने झेली। कहीं साया न था, न ही बैठने का ठिकाना। मैं वही देत पट बेहोश होगया। होश में आने पट फिट उसी अग्रकट गटमी, घ्यास और कोड़ों की यातना थी। शायद उस हालत में मुझ पर सैकड़ों साल गुज़र गए होंगे। ठाकुर इतना सुना कर फूट-फूट कर रोने लगा। वह रो रहा था और मेरे पास तसल्ली देने के लिये फूटे शब्द भी नहीं थे। "यही तुम्हारी कब्र अवस्था थी", मैं ने ज़ज़बात से खाली लहजे मैं उस से कहा, "आज हमारे लिये कहीं पनाह नहीं है, न ज़मीन के अन्दर न बाहर। पता नहीं अभी आगे क्या

कुछ सामने आता है? लेकिन यह तो क्रियाकर्म से पहले का किस्सा है। उसके बाद तो तुम्हारा शब जलाया गया ना"? उसके मुँह से एक लम्बी आह निकली और उसने फिर अपनी दास्तान का अगला हिस्सा शुरू किया.....

"मैं एक बार फिर बेहोश होगया। होश में आने पर अपने आप को घर के पास पाया। 'राम नाम सत् है...' के शब्दों के साथ मेरी अर्थी मेरे लड़कों के कांधों पर शमशान जा रही थी। मेरी और तो कुछ समझ में न आया, मैं भी अर्थी के साथ-साथ चलने लगा। लड़कों के देहरे से साफ़ जाहिर था कि उनका बस चलता तो वे मुझे वहीं फेंक कर चले जाते लेकिन समाज और वीमे की रकम से मजबूर थे। शमशान में मेरे शब के ऊपर चार क्विन्टल लकड़ी लादी गई। साढ़े तीन क्विन्टल से भी काम चल जाता लेकिन मैं ने और मेरे बेटों ने एक ऐसा घटना भी सुनी थी जब एक महिला के मृत शरीर पर लकड़ियाँ कुछ कम रह गईं और धी आदि सामग्री से जल कर वह भी सामान्य से कुछ पहले ही जल गई। महिला के अभी कपड़े ही जले थे, शरीर ठीक से जलना शुरू भी नहीं हुआ था। उस की नंगी लाश अकड़ कर खड़ी हो गई। उसके लड़के ने लाठी से उसका सिर फोड़ा तो वह लाश गिरी और जलदी जलदी और लकड़ियाँ आने तक उसके नंगे शरीर को चादरें डाल-डाल कर छिपाया जाता रहा जो बार-बार जल-जल जाती थीं। उस समय तो लड़के ने उस दृश्य को जैसे तैसे झेला लेकिन शमशान से बाहर आते ही उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। उसकी समझ में आया कि वही धर्म सत्य है जिस में दफनाने का त्तरीका है। खैर, मेरे बड़े लड़के ने चिता में आग लगाई। नरक से पहले ही मेरा पुराना शरीर जल रहा था लेकिन न जाने क्यों मुझे ऐसी ही पीड़ा हो रही थी जैसे जीवित जलाया जा रहा हूँ। मैं तड़पता रहा और लोग मुझे और मेरे शब को जलता हुआ छोड़ कर अपने अपने घरों का चल दिये।"

"मेरी कुछ और समझ में न आया तो मैं भी घर की ओर चला। शाम का समय था और मेरे घर वाले थक कर कुर्सियों और चारपाईयों पर ढेर हो रहे थे। धन की कमी न थी, उन्होंने दो पण्डितों को अब भी मेरी आत्मा की शान्ति के लिये मेरे कमरे में पाठ पर बैठा रखा था। उन्हें इसकी परवाह न थी कि उनके पाठ को सुनने वाला कोई वहाँ न था, उन्हें तो अपनी फीस मिलनी थी। मैं ने जीवन में धर्म ग्रन्थों का न कभी पाठ किया था और न सुना था। सोचा आज यही सही, शायद इसी से आगे की यातना से बच जाऊँ या सुनने से उस पीड़ा में ही कुछ कमी हो जाए जिस से पोर-पोर अब भी दुख रहा था। पाठ संस्कृत में था जो मुझे नहीं आती थी लेकिन न जाने कैसे सब कुछ मेरी समझ में आ रहा था। पता नहीं कैसे मुझे यह भी मालूम था कि एक पण्डित जी गरुड़ पुराण का पाठ कर रहे थे और दूसरे भागवत पुराण का। मैं ने अपना ध्यान गरुड़ पुराण की ओर लगाया। पण्डित जी संस्कृत में पढ़ रहे थे कि उस मार्ग में गिरता औट बक्का हुआ मूर्च्छित होकर फिर उठा हुआ वह प्राणी अति पापी तम से यम के लोक में पहुँचाया जाता है औट दूत उसको अति घोट नटक की ओट ले जाते हैं... इन के आगे यम का पुट है... बारहों सूर्य ऐसे तपते हैं जैसे प्रलय के अन्व में तपते हैं... हे परलोक के पश्चिका तू यमराज के बल को नहीं जानता है औट यम के मार्ग में तुम जैसे प्राणियों के साथ जाने वाले हम दूतों के बल को भी नहीं जानता है... यमराज यातना न दे इसके लिये यल भी नहीं किये... तुम्हारा उस मार्ग से चलना निश्चित है, जिस मार्ग में क्र्य विक्र्य नहीं है। इस मार्ग को तो बालक भी जानते हैं हे मनुष्य, तूने नहीं सुना है? मैं ने सुना तो था परन्तु यह सब तो मुसलमानों की जुबान से सुना था। मेरे दिमाग में आँधियाँ चल रही थीं। इन पण्डितों ने तो हमें यह विश्वास दिलाया था कि मरने के फौरन बाद हमारा किसी और योनी में

जन्म हो जाएगा और अब यह परलोक और नरक का पाठ पढ़ा रहा है। बड़े धोखे में है पूरी कौम और सच तो यह है कि गरुड़ पुराण की यह वात ही सच थी, मेरा अपना भी तो किसी और शरीर में जन्म नहीं हुआ था। मैं ने फिर ध्यान उधर 'तगाया' कि और क्या कुछ है गरुड़ पुराण में। पण्डित जी का पाठ सुनने वाला वहाँ मेरे अलावा कोई और नहीं था। होता भी तो क्या फर्क पड़ता? जीते जी मैं भी अगर उसे सुनता तो संस्कृत पाठ समझ न पाता। पाठ जारी था...धर्मदाज के वे दूत मनुष्यों के शुश्र अशुश्र, मन वाणी तथा शटीट से उत्पन्न कर्म को पूरी तरह से जानते हैं। व्रत, दान और सत्य बोलने से जो मनुष्य ईश्वर को प्रसन्न करता है, वे उसको स्वर्ग को देने वाले होते हैं... पापियों के पापकर्मों को जानकर सत्यवादी वे, धर्मदाज के सामने कहे जाने से दुःखदायी होते हैं... चित्र-गुप्त से क्रमों के लेख में न कोई गुलती होती है और न वे किसी की तरफदायी करते हैं.... अरे! यह चित्र गुप्त वही तो नहीं जिहें मुसलमान मुन्किर नकीर कहते हैं। और सुनूँ... चौरासी लाख नरक हैं! चौरासी लाख नरक!!! चौरासी लाख तो हम से वह यैनियाँ कही जाती थीं जिन में आत्मा का जन्म बार-बार कर्मानुसार यहीं जमीन पर होता है। जो मनुष्य शुश्रकर्मों को छोड़ कर अशुश्र कर्मों ही में सदा लगे रहते हैं वे एक नरक से दूसरे नरक में जाते हैं, तीनों द्वायें से होकर धर्मात्मा यम पुरुषों जाते हैं और पतीतों दक्षिण द्वाय ही के मार्ग में होकर यमपुरुषों जाते हैं। इसी महा दुःख देने वाले मार्ग में वैतरणी नदी है, उसमें जो पापी जाते हैं उनको मैं तुमसे कहता हूँ...सदा उसी में वास रहता है। सदा??? बड़ा धोखा होगया। यह लोग तो हम से मरते ही अगले पल संसार में किसी शरीर में जन्म लेने की वात करते थे। लोग तो इस लिये भी गुलत आस्थाओं और बुरे कर्मों को नहीं छोड़ते

कि इस समय का भोग विलास क्यों छोड़ें, अगले जन्म में कुछ कष्ट झेल कर फिर अच्छा शरीर मिल जाएगा, तब देखा जाएगा। यह पण्डित मरने वाले के संवादियों से अपनी फीस लेकर चले जाते हैं कि आत्मा की शान्ति हो गई और हर मरने वाले से संस्कृत में यह कहते हैं कि अब कर्म का समय समाप्त अब तुझे अपनी आस्था और कर्मानुसार स्वर्ग या नरक में जाना है। हाय, इस पाठ को अब सुनने या समझने का कोई फायदा नहीं। मैं ने वहाँ से उठने का इरादा किया लेकिन फिर बैठ गया। दूसरे पण्डित जी श्रीमद भगवत पुराण का पाठ कर रहे थे। उसे भी सुनें लेता हूँ, शायद कोई सहारे की वात, इस समय वच निकलने की वात इस में मिले”।

“दूसरे पण्डित जी पाठ कह हे थे... उस नरक लोक में अगवान के सेवक उस की आज्ञा से अपने दूरों द्वाया वहाँ लाए हुए मृत प्रणियों को उनके दुष्कर्मों के अनुसार पाप का फल दण्ड देते हैं... तामित्र नरक में — उसे अब्ज-जल न देना, डब्बे लगाना और श्य दिखलाना आदि अनेक प्रकार के उपायों से पीड़ित किया जाता है। इसके अत्यन्त दुर्खी होकर वह एकाएक मूर्च्छित हो जाता है... अन्यतमित्र नरक में — वहाँ की यातनाओं में पड़कर वह जड़ से कटे हुए वृक्ष के समान वेदना के आरे साई सुध-बुध खो बैठता है। और उसे कुछ भी नहीं सूझ पड़ता... दीर्घ नरक में — ‘रूल’ सर्प से भी अधिक क्रूर स्वभाव वाले एक जीव का नाम है। वहाँ कच्चा मांस खाने वाले रूल इसे मांस के लोग से काटते हैं... यमदूत कुम्भीपाक नरक में — ले जाकर खौलते हुए तेल में दौँघते हैं... कालसूत्र नरक में — इसका धेया दस हजार योजन है। इसकी भूमि ताँबी की है। इसमें जो तपा हुआ मैदान है, वह ऊपर से सूर्य और नीचे से अग्नि के दाह से जलता रहता है। वहाँ पहुँचाया

हुआ पापी जीव भूख-यास से व्याकुल हो जाता है। और उसका शटीट बाहर-भीतर से जलने लगता है। उसकी बैचेनी यहाँ तक बढ़ती है कि वह कभी बैठता है, कभी लेटता है, कभी छटपटाने लगता है, कभी खड़ा होता है और कभी इष्ट-उष्ट दौड़ने लगता है। इस प्रकार उस नए पशु के शटीट में जितने दोष होते हैं, उनमें ही हजार वर्ष तक उसकी यह दुर्गति होती रहती है...असिपत्रवन नरक में — जब माट से बचने के लिए वह अष्ट-उष्ट दौड़ने लगता है, तब उसके आए अंग तालवन के तलवार के समान पैने पत्तों से, जिन में दोनों ओर धारे होती हैं, टुकड़े टुकड़े होने लगते हैं। तब वह अत्यन्त वेदना से 'हाय मैं मरा!' इस प्रकार चिल्लाता हुआ पद-पद पद मूर्छित होकर गिरने लगता है। अपने धर्म को छोड़कर पाखण्ड मार्ग में चलने से उसे इस प्रकार अपने कुरुक्षे का फल शोगना पड़ता है...सूक्ष्मयुध नरक में — जब महाबली यमदूत उसके अंगों को कुचलते हैं तब वह कोतुं भैं पेटे जाते हुए गन्धों के समान पीड़ित होकर जिस प्रकार इस लोक में उसके सताये हुए निरपाध ग्राणी दोते-चिल्लाते थे, उसी प्रकार कभी आर्त स्वर से चिल्लाता और कभी मुर्छित हो जाता है... अन्यकूप नरक में — वहाँ वे पशु, मृग, पक्षी, साँप आदि देंगने वाले जन्म, मच्छर, ज़ूँ खटभल उसे सब ओर से काटते हैं इससे उसकी निद्रा और शाक्ति अंग हो जाती है और स्थान न गिलने पर भी वह बैचेनी के कारण उस घोट अन्यकार में इस प्रकार शटकता रहता है जैसे दोग़रात शटीट में जीव छटपटाया करता है...परनोक में कृषि शोजन नामक निवृष्ट नरक में — वहाँ एक लाख योजन लंबा-चौड़ा एक कीड़ों का कुण्ड है। उसी में उसे भी कीड़ा बन कर रहना पड़ता है। और वहाँ कीड़े उसे

नोचते हैं और वह कीड़ों को खाता है... सन्देश नामक नरक में — तपाये हुए लोहे के गोले से ढागते हैं और सँड़ासी से उसकी खाल नोचते हैं...तपासूर्मि नामक नरक में जाकर — कोड़ों से पीटते हैं तथा पुरुष को तपाये हुए लोहे की छत्री-मूर्ति से और लत्री को तपायी हुई पुरुष प्रतिमा से अलिंगन करते हैं... वज्रकण्टकशात्मती नरक में — वज्र के समान कठोर कोड़ों वाले स्नेह के वृक्ष पर चढ़ा कर फिर नीचे की और खींचते हैं... वैतरणी नदी में — यह नदी नरकों की खाई के समान है उसमें मल, मुत्र, पीप, रक्त, क्लेश, नख, हड्डी, चर्बी माँस और मज्जा आदि गंदी चीजें भरी हुई हैं। वहाँ गिरने पर उन्हें इष्ट-उष्ट जल के जीव नोचते हैं। किन्तु इससे उनका शटीट नहीं छूटता, पाप के कारण प्राण उसे वहन किये रहते हैं और वह उस दुर्गति को अपनी कट्टी का फल समझ कर मन ही मन सन्तान होते रहते हैं — मरने के बाद पीप, विषा, मूत्र, कफ और मल से भरे हुए पूरोद नामक समुद्र में गिर कर उन अत्यन्त धृणित वस्तुओं को ही खाते हैं... प्राणदोष नरक में — यमदूत उन्हें लक्ष्य बनाकर बाणों से बीघते हैं... पैशस (विशसन) नरक में डाल कर — वहाँ के अधिकारी बहुत पीड़ा देकर काटते हैं... तीर्थ की नदी में डाल कर तीर्थ पिलाते हैं... साटग्रेदन नामक नरक में — वज्र की सी दाढ़ों वाले सात सौ बीस यमदूत कुने बन कर बड़े वेग से काटने लगते हैं... अवीचिमान नरक में — उसे सौ योजन ऊँचे पहाड़ के शिखर से नीचे को दिए करके गिराया जाता है उस नरक की पत्थर की भूमि जल के समान जान पड़ती है वहाँ गिराए जाने से उसके शटीट के टुकड़े-टुकड़े हो जाने पर भी प्राण नहीं निकलते, इसलिए इसे बाट बाट ऊपर लेजाकर पटका

जाता है... अयःपान नाम के नरक में — उनकी छाती पट पैर रखकर उनके मुँह में आग से गलाया हुआ लोहा डालते हैं... शार्ट-कर्दम नाम की नरक में — नीचे को दिट करके गिराया जाता है औट वहाँ उसे अनज्ञ पीड़िएँ शोगना पड़ती है... दक्षोगणओजन नामक नरक में — कमाइयों के समान कुलाड़ी से काट-काट कर उसका लहू पीते हैं... शूलप्रोत नामक नरक में — शूलों से बेधा जाता है उस समय जब उन्हें भूख प्यास सताती है औट कड़क, बटेट आदि तीखी चोंचों वाले नरक के भयानक पक्षी नोचने लगते हैं तब अपने किये हुए सारे पाप याद आ जाते हैं... — दब्द शूक नाम के नरक में... वहाँ पाँच-पाँच सात सात मुँह वाले सर्प उनके सभीप आकर उन्हें चूहों की तरह निगल जाते हैं — परलोक में यमदूत वैसे ही स्थानों में डाल कर विसैनी आग के धूंएं में घोटते हैं इसलिए इस नरक को अवटनिरोधन कहते हैं — जो नरक में जाता है, तब उस पापदृष्टि के नेत्रों को गिद्ध, कड़क, काक औट बटेट आदि वज्र की सी कठोर चोंचों वाले पक्षी बलात्काट से निकाल लेते हैं। इस नरक को पर्यावर्तन कहते हैं... सूची मुख नरक में — उस अर्थपिशाच पाप आत्मा के सारे अंगों को यमराज के दूत दर्जियों के समान सूई धागे से सीते हैं — हृजायों नरक हैं। उनमें कुछ का यहाँ उत्तेख हुआ है औट अन्यों विषय में कुछ नहीं कहा गया...

मेरे नए शरीर का हर रौंगटा खड़ा था। मेरा अन्जाम एक फ़िल्म की तरह मेरी आँखों के सामने चल रहा था। फिर वही जुमला दिमाग में गूंजा जो गरुड़ पुराण को सुनते समय बार-बार गूंजा था, 'बड़ा धोखा हो गया'। कभी यदि परलोक या स्वर्ण-नरक का नाम आता भी था तो हमें यह सिखाया जाता था कि स्वर्ग इसी संसार

के सुखों का नाम है और नरक इसी संसार के दुखों का नाम है। अब मेरा विल्कुल अलग वास्तविकताओं से सामना था। मैं ने जो सुना था वह अलंकृत भाषा में संसार के दुख सुख का हाल नहीं था, इन ग्रन्थों की बात सुन कर तो कोई बच्चा भी समझ सकता था कि परलोक इस लोक से अलग है और नरक एक वास्तविकता है..." ठाकुर फिर रोने लगा।

"हाजी साहब, मेरे दोस्त", उसने मुझे बहुत गिड़गिड़ते हुए कहा, "तुम्हें अब तक जो भी यातना पहुँची, लेकिन तुम्हारे लिये तो आशा की किरन मौजूद है। तुम ने एक बार मुझे बताया था कि तुम मुसलमान हो और तुम ने कलिमा पढ़ा है इस लिये तुम्हारे लिये स्वर्ग निश्चित है। तुम ने यह भी बताया था कि कलिमा पढ़ने के बावजूद जो बुरे कर्म होंगे उन्हें अजमेर वाले ख्वाजा साहब बख्शचा देंगे। तुम तो ख्वाजा साहब के बहुत चहीते हो, हर साल उनके मजार पर चादर भेजते थे। ख्वाजा साहब से मेरी भी सिफारिश करवा दो और मेरी नरक की सजा कुछ कम करा दो। मुझे जब से हकीकत मालूम हुई है, मेरा डर से बुरा हाल है... मेरे भाई... चुप क्यों हो? मुझ पर यह एहसान करोगे ना?..."

ठाकुर खुशामद किये जा रहा था और मैं सुन बैठा था। आखिर मैं ने थके थके लहजे में उससे कहा, "मैं तुम्हें क्या बचवाऊँगा ठाकुर, खूद मेरा अन्जाम भी नरक ही होने वाला है। तुम्हारी तरह मैं भी धोके में रहा। मुझ तक उन पुनीतात्मा का सन्देश गतज पहुँचाया गया था उन्होंने कभी ऐसा दावा नहीं किया था। मैं ने भी इस बात को तब जाना जब कर्म करने का समय बीत चुका"। हम दोनों ही अब चुप थे। सुवह का उजाला हल्का हल्का फैल रहा था। बहुत से हिन्दू अपने अपने घरों से निकल कर मन्दिरों की ओर बढ़ रहे थे। यह बेचारे भी धोखे में थे। कुछ बूढ़े मुसलमान मस्जिद की तरफ बढ़ रहे थे और उनकी बड़ी संख्या पड़ी नीन्द के मज़े ले रही थी। अजान देने वाला आवाज़ दे रहा था "... नमाज़ नीन्द से

बेहतर है, अल्लाह सब से महान है..." काश यह सोने वाले उस आवाज़ को सुनते और उस पर यकीन रखते।

भाईयो और बहनो! मेरे धायल हाथ देखो — यह कांपते हुए हाथ जोड़ कर खुदा का वास्ता देकर कहता हूँ — मेरे इस अन्जाम से सीख लो। बुढ़ापा आने से पहले जवानी में ही कुछ करलो — बीमारी आने से पहले स्वस्थ होने की अवस्था में ही कुछ कर लो। पैसे की तंगी आने से पहले धन की प्रचुरता में ही कुछ कर लो। व्यस्तता आने से पहले फुरसत में ही कुछ करलो और मौत आने से पहले जिन्दगी में ही कुछ कर लो..... वरना हमारी तरह पछताओगे।

हमें यहाँ आकर पता चला कि हमारे ऊपर जो कुछ बीत रही है वह सब वही है जो उस (ईश्वर) की पाक किताबों में लिखा है और उसके रसूलों (ईश्टूतों) ने बतलाया था मगर दुनिया में शैतान हमारे ऊपर ऐसा सवार था जो हमें सिखलाता रहा कि यह सब बेकार बातें हैं। ये दुनिया का जीवन ही सब कुछ है, इसे आराम और ऐश से गुजार दो। जब हम सब मर खप जाएंगे तो हमारे ऊपर इन अजाबों (यातनाओं) का क्या असर होगा और हम सब धोके में आ गए जब कि हम जानते थे कि यह जिन्दगी आरजी (अस्थाई) है जिसकी हकीकत असल जिन्दगी के मुकाबले में समुन्दर में एक बून्द की भी नहीं। असल जिन्दगी तो वह है जो कियामत (महाप्रलय) के बाद शुरू होगी जिसमें जन्मत और दौजख (सर्वं व नर्क) के फैसले होंगे और जो कभी ख़त्म नहीं होगी, जिसमें हमें आनन्द ही आनन्द या यातनाएं ही यातनाएं मिलेंगी, जिन्हें हम सोच भी नहीं सकते।

हम दोनों अब अपनी-अपनी कब्र अवस्था की यातना के अगले क्षणों से भयभीत यहाँ बीराने में बैठे हैं जब अजाब के फरिश्ते हमें हमारे निश्चित समय पर अजाब देने के लिये आ धमकेंगे। और यह समय-समय पर अजाब का सिलसिला क्यामत, महाप्रलय तक

चलेगा और उसके बाद... आह...उसके बाद हमें असल हिसाब के बाद नरक में डाला जाएगा जहाँ इस से कहीं अधिक भयानक यातनाएं होंगी, बीच में इन्टरवेल नहीं मिलेगा, लगातार होंगी, सदा के लिये, अनन्त होंगी — काश क्यामत न आए — जल्दी न आए — क्योंकि इस कब्र की यातना के जीवन में हम उस से हजारों गुना कम अजाब में हैं।

इस दास्तान के पाठकों से विनम्र विन्दी

प्रिय भाईयो और बहनो!

यह तो हम सब जानते और मानते हैं कि एक दिन हमें मौत का मज़ा चखना है और इस लिये हम खुदा (ईश्वर) का वास्ता देकर आप से कहते हैं अपने आप को इस अजाब से (यातनाओं) से बचा लीजिए वरना आप की मदद करने वाला कोई नहीं होगा। न औलाद, न रिश्तेदार न माल-दौलत न कोई पीर या भगवान जिनसे आप उम्मीद रखते हों और न कोई देवी-देवता। जो घर आप छोड़ कर जाएंगे वह भी आपका नहीं रहेगा। हाँ आप कुछ अच्छे और बुरे कर्म कर जाएंगे वही आपके साथ जाएंगे। उस वक्त की कोई दुआ और फ़रियाद भी कुबूल नहीं होगी। इस लिये अभी वक्त है। आपकी निजात (मुक्ति) का सिर्फ एक रास्ता है कि सबसे पहले उस ईश्वर को एक मान लें और किसी को उसका साझी न बनाएं और किसी पीर, पैग़म्बर या अपने ही हाथों से बनाई हुई मूर्तियों की इबादत (पूजा) न करें। यही संदेश ईश्वर ने महाजलच्छावन वाले मनु के माध्यम से वेदों के रूपारा दिया। फिर यही पैग़ाम उस के भेजे हुए 124000 पैग़म्बरों (ईश्टूतों) ने हम इन्सानों को दिया। और यही पैग़ाम 1400 साल पहले आधिरी नवी मुहम्मद (स0) के ज़रिये

हम सब तक पहुँचा। कियामत (महाप्रलय) तक अब कोई और नवी नहीं आएगा।

प्रिय पाठको! अब तक जो बीत गया सो बीत गया। अभी वक्त है कि मौत आने से पहले उस (ईश्वर) से अपने गुनाहों की माफी मांग लें। यह उस का वादा है कि “मैं अपने बन्दों के थड़े से बड़े गुनाहों को माफ़ करदूगा, अगर वे अपनी ज़िन्दगी में सच्च दिल से तौबा करें। मगर एक गुनाह (पाप) — मेरी सत्ता में किसी को मेरा साझी बनाना — माफ़ नहीं करूँगा और जो ऐसा करेगे उनका ठिकाना जहन्नुम (नर्क) होगा, जिसमें वह हमेशा रहेंगे।” इसलिए उस पर भरोसा रखें क्योंकि वह बहुत रहम करने वाला (दयालू) है। और अपने बादे के खिलाफ़ नहीं करता अब समझदारी इसी में है कि हम सब को जल्द रिसालत पर पूरा यकीन रखते हुए अपनी बाकी उम्र को ज़ाया न करें और उसके एहकाम (इच्छाओं, आदेशों) पर पूरा-पूरा अमल करके उस (परमेश्वर) को खुश करके आखिरत में कामयाब हों और कियामत और दोज़ख (नर्क) के अज्ञाव से बच कर जन्नत (स्वर्ग) के हकदार हो जाएं जहां आराम ही आराम होगा और कभी मौत न आएगी।

यह जो कुछ लिखा गया है ये सब कुरआन और वेद पर आधारित है।